[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3941 **A**

Unique Paper Code : 62057638

Name of the Paper : विशेष अध्ययन : एक प्रमुख साहित्यकार प्रेमचंद

Name of the Course : **BA (Prog.)**

Semester : II

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10=20)

(क) वही पशुता उसे पुरुष बनाती है। विकास के क्रम में वही स्त्री से पीछे है। जिस दिन वह पूर्ण विकास को पहुंचेगा, वह भी स्त्री हो जाएगा। वात्सल्य, स्नेह, कोमलता, दया इन्हीं आधारों पर यह सृष्टि थमी हुई है। और यह स्त्रियों के गुण हैं। अगर स्त्री इतना समझ ले तो फिर दोनों का जीवन सुखी हो जाय। स्त्री पशु के साथ पशु हो जाती है, तभी दोनों सुखी होते हैं।

P.T.O.

अथवा

ज्यों-ज्यों जत्था आगे बढ़ता था और लोग आ-आकर मिलते जाते थेय पर ज्यों-ज्यों मंदिर समीप आता था, लोगों की हिम्मत कम होती जाती थी। जिस अधिकार से ये सदैव वंचित रहे, उसके लिए उनके मन में कोई तीव्र इच्छा न थी। केवल दुःख था मार का। वह विश्वास, जो न्याय-ज्ञान से पैदा होता है, वहां न था। फिर भी मनुष्यों की संख्या बढ़ती जाती थी। प्राण देने वाले तो बिरले ही थे। समूह की धौंस जमाकर विजय पाने की आशा ही उन्हें बढ़ा रही थी।

(ख) इस निर्णय की कहीं अपील न थी। मजूर की जमानत कौन करता? कहीं शरण न थी, भागकर कहाँ जाता? दूसरे दिन से उसने विप्रजी के यहाँ काम करना शुरू कर दिया। सवा सेर गेहूँ की बदौलत उम्र-भर के लिए गुलामी की बेड़ी पैरों में डालनी पड़ी। उस अभागे को अब अगर किसी विचार से संतोष होता था, तो यह था कि यह मेरे पूर्व जन्म का संस्कार है। स्त्री को वे काम करने पड़ते थे, जो उसने कभी न किये थे। बच्चे दानों को तरसते थे, लेकिन शंकर चुपचाप देखने के सिवा और कुछ न कर सकता था। गेहूँ के दाने किसी देवता के शाप की भाँति आवजीवन उसके सिर से न उतरे।

अथवा

दोनों पक्षों की मधुर वाणियाँ सुनने के लिए उनकी आत्माएँ तिलमिलाने लगीं। गाँव में कुछ ऐसे कुटिल मनुष्य भी थे, जो इस कुल की नीतिपूर्ण गति पर मन ही मन जलते थे। वे कहा करते थे—श्रीकंठ अपने बाप से दबता है, इसीलिए वह दब्बू है। उसने विद्या पढ़ी, इसलिए वह किताबों का कीड़ा है। बेनीमाधव सिंह उसकी सलाह के बिना कोई काम नहीं करते, यह उनकी मूर्खता है। इन महानुभावों की शुभकामनाएँ आज पूरी होती दिखायी दीं। कोई हुक्का पीने के बहाने और कोई लगान की रसीद दिखाने आ कर बैठ गया। बेनीमाधव सिंह पुराने आदमी थे। इन भावों को ताड़ गये। उन्होंने निश्चय किया, चाहे कुछ ही क्ध्यों न हो, इन द्रोहियों को ताली बजाने का अवसर न दूँगा। तुरंत कोमल शब्दों में बोले–बेटा, मैं तुमसे बाहर नहीं हूँ। तम्हारा जो जी चाहे करो, अब तो लड़के से अपराध हो गया।

2. प्रेमचंद बड़े उपन्यासकार हैं या बड़े कहानीकार? अपना मन्तव्य बताइए ।

अथवा

'कर्बला' नाटक मनुष्यता का सन्देश देता है। इस कथन का परीक्षण कीजिये। (15)

3. 'बड़े घर की बेटी' में खास तरह का आदर्शवाद है।' इस कथन के पक्ष अथवा विपक्ष में विचार व्यक्त कीजिये।

अथवा

पाठ्यक्रम में आए प्रेमचंद के उपन्यास अथवा किसी कहानी के अपनी पसंद के किसी एक पात्रा का चरित्र चित्रण कीजिये। (15)

4. 'कलम का सिपाही' में आए प्रेमचंद के व्यक्तित्व के महत्त्वपूर्ण पक्षों को बताइये।

अथवा

'कर्मभूमि' का कथा सार लिखिए। (15)

5. किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) प्रेमचंद का अवदान

(ii) सद्‌गति में दलित जीवन

(iii) सवा सेर गेहूं में शोषण के आयाम

(iv) कर्मभूमि की औपन्यासिक सफलता (5 + 5 = 10)